



## Original Article

### 21वीं सदी के द्वितीय दशक के प्रातिनिधिक लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित धार्मिक समस्या

श्रीमती. वैशाली महादेव जाधव

शोधार्थी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130355

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 279 - 282

Submitted: 03 Feb. 2026

Revised: 11 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

श्रीमती. वैशाली महादेव जाधव

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786621

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786621>



Creative Commons



**सार:**

मानवता ही मनुष्य का प्रकृति धर्म कहलाता है। लेकिन व्यवहार में धर्म किसी एक अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता है। एक ऐसी विशाल संकल्पना धर्म है जो मानव को पशुत्व से पृथक् करके मानव की श्रेणी में ला खड़ा कर देती है। धर्म के द्वारा ही समाज का कल्याण संभव है। धर्म से ही समस्त प्रजा बंधी हुई है। भारत भूमि को 'धर्मभूमि' भी कहा जाता है। धर्म मनुष्य के शुद्ध आचरण पर बल देता है। मनुष्य का आचरण शुद्ध- अशुद्धता का ज्ञान धर्म पर ही आश्रित है। लेकिन आज कल यह देखने को मिल रहा है कि धर्म एक समस्या बना है। धर्म को लेकर अनेक भ्रष्टाचार हो रहे हैं। भ्रष्टाचार मंदिरों में भी हो रहे हैं। पहले लोग धर्म को किस तरह पालन करते थे लेकिन अब सभी लोग भूल गए हैं। धर्म के नाम पर अंधविश्वास, धर्मान्धता, धार्मिक कर्मकांड, समभाव, अन्तर्धार्मिक, धार्मिक अनुष्ठान आदि कुप्रथाएँ धर्म के नाम पर जन्म लेये हैं। समाज में अनेक जाति-धर्म वर्ण से सजा हुआ है। प्रत्येक मनुष्य अपने धर्म के प्रति सचेत है। इस समाज में मनुष्य धर्म पर बहुत ही विश्वास रखता है। सामाजिक और सांस्कृतिक नीतिविधियों का आधार धर्म माना गया है।

**मुख्य शब्द:** अंधविश्वास, धर्मान्धता, धार्मिक कर्मकाण्ड, समभाव, अन्तर्धार्मिक, धार्मिक अनुष्ठान

**Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)**

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

**How to cite this article:**

श्रीमती. वैशाली महादेव जाधव. (2026). 21 वीं सदी के द्वितीय दशक के प्रातिनिधिक लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित धार्मिक समस्या. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 279 - 282. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786621>

**प्रस्तावना:**

‘धरायति इति धर्माः’ अर्थात् जो धारण किया जाता है वही धर्म है। धर्म एक शक्ति भी है और एक विश्वास भी है। धर्म मनुष्य के कर्म को तय करता है। मनुष्य का कर्म धर्म के अनुसार रहा तो वह मनुष्य धर्मराजा कहा जाता है। “ऋग्वेद में धर्म का

अर्थ या धार्मिक क्रिया माना है। उपनिषदों में भी धर्म का अर्थ इसी के आसपास माना है। धारण करने के कारण धर्म कहलाता है। धर्म प्रजा को धारणा करता है, जो धारण शक्ति से युक्त है, वही धर्म है, इसे निश्चय समझो”<sup>1</sup> धर्म जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष



और जीवन का उद्देश्य है। वर्तमान समय में मानव अंधविश्वास पर विश्वास रखता है। आज वैज्ञानिक युग में गरीब और अशिक्षा के कारण मानव अंधविश्वास में डूबे हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी अलौकिक शक्तियों के प्रति लोगों के अंदर वही सोच बनी हुई है। आज समाज में धर्म के नाम पर स्त्री शोषण भी हो रहा है। समाज में भी सभी धर्म स्त्री विरोधी है। साथ ही जाति भेद तथा धर्म भेद इतने हद तक फैला है कि हर एक धर्म दूसरे धर्म को तथा हर एक जाति दूसरी जाति को निम्न दिखाने का प्रयास करती है। राजनीतिक स्वार्थ के लिए धर्म का उपयोग लेते हैं। कुछ दोंगी बाबा आर्थिक लाभ उठाने के लिए धार्मिक गुरु लोगो की आस्था का फायदा उठाकर उनसे धन प्राप्त करते हैं।

### **21वीं सदी के द्वितीय दशक के प्रातिनिधिक लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित धार्मिक समस्या:**

भारत में धर्म की जड़ें गहरी है। धर्म रूपी पेड़ अपनी शाखाएं- उपशाखाओं के साथ अपने अस्तित्व को प्रमाणित कर रहा है। पूर्णतः भारतीय जीवन धर्म पर ही आधारित है। लेकिन वर्तमान समय में धर्म के विनाश होता जा रहा है। हमारे सामने धर्म एक समस्या के रूप में खड़ा है। कई तरह की रूढ़ियाँ और अन्धविश्वास आज धर्म के नाम पर फैल रहे हैं।

मधु कांकरिया द्वारा लिखित 'सुखते चिनार' उपन्यास में अंधविश्वास एवं अंधश्रद्धा में डूबे हुए लोगों का चित्रण इस उपन्यास में लेखिका ने किया है। इस उपन्यास में संदीप फौज में भर्ती होना चाहता है। लेकिन उसके पिता शेखर बापू उसे फौजी में जाने के लिए विरोध करते हैं उस समय सुधीर पापा से कहता है कि "मेरा मित्र लालदेव जब सेना में भर्ती होने जा रहा था तब उसे रोकने के लिए उसकी माँ ने कई जादू-टोने चलाए। ओझा-गुनी को बुलावा कर जादू-टोना करवाया और उसके लिए अपने सारी संचित पूंजी जो भी दी थी उसके पास बर्तन भांडे

और धन वगैरह सब उसे दे डाला" 2 लेखिका ने इस तरह एक माँ अपने बेटे को रोकने के लिए किस तरह विश्वास रखती है उसी का चित्रण इस उपन्यास में दर्शाया है। अंधविश्वास विश्व के कई देशों में चलता आ रहा है। लेकिन हर एक देश में अंधविश्वास का स्वरूप थोड़ा अलग रहता है। यही अन्धविश्वास मनुष्य की प्रगति में कठिनाई बनकर सामने आता है। इस में अन्धविश्वास के साथ धर्मों के नाम पर लड़नेवाले लोगों का भी चित्रण किया है।

शरद सिंह द्वारा लिखित 'कस्बाई सिमोन' उपन्यास में धार्मिक कर्मकाण्ड का चित्रण किया है। भारत देश में धर्म के यथार्थ स्वरूप को भूलकर पाप-पुण्य पर बहुत विश्वास रखते हैं। पुण्य प्राप्त करने के लालच में अन्धविश्वास पर विश्वास रख रहे हैं। भगवान की पूजा करना, व्रत उपासना करना, मन्नते मानना यह सभी भारत की परंपरा रही है। यह बात उनके मस्तिष्क में बैठी है। कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हुआ तो कार्य पूर्ति के लिए व्रत-उपासना करके मन्नते मांगती है। कार्य पूर्ण होने के बाद मांगी हुई मन्नतो को पूर्ण करते हैं। 'कस्बाई सिमोन' उपन्यास की नायिका सुगंधा एक ऐसी ही पढ़ी लिखी स्त्री है। सुगंधा व्रत-उपासना इन बातों पर वह विश्वास नहीं रखती है लेकिन फिर भी उसे करवाचौथ वाले दिन रितिक की लंबी उम्र के लिए पड़ोसवाले लोगों के साथ मिलकर करवाचौथ के व्रत की पूजा करनी पड़ती है। सुगंधा सोच में पड़ती है कि व्रत तो किया है पूजा करे या न करें। सुगंधा आधुनिक सोच की है वह सोचती है कि करवाचौथ वाले रात को जीस चाँद को छलनी में देखते हैं वह तो निर्जीव ऊबड़-खाबड़ सा उपग्रह ही तो है। दूसरे दिन बाजार जाकर नई साड़ी और छावनी लेकर आती है। लेकिन पूजा कैसे करना उसे पता नहीं था। जब कीर्ति सुगंधा से पूछते हैं कि क्या तुमने उपासना रखा है क्या तब सुगंधा झूठ कहती हैं कि हाँ रखा है। लेकिन सच तो वह था कि वह उपासना न करके



भरपेट भोजन की थी। जब उमा वर्मा के आमंत्रण पर सुगंधा तैयार होकर घर जाने के लिए तैयार होती हैं तो रितिक पूछता है कि आज तो कहीं बाहर जाना नहीं है। फिर इतना क्यों तैयार हुवी हो तब सुगंधा रितिक से कहती है कि “उमा वर्मा के घर एक पूजा है। उसने बुलाया है। नहीं जाऊँगी तो वह बुरा मान जाएगी।”<sup>3</sup> सुगंधा रितिक को करवाचौथवाली बात नहीं बताती है। लेकिन बाद में उसे पता चलता है। क्योंकि जब सुगंधा उमा के घर जाती है तब सभी लोग अपने पतियों को वही बुलाया था और सभी औरत चांद और पति के चेहरे को देखने के लिए बेचैन थे। उमा वर्मा रितिक को भी वही बुलाया था। उस समय रितिक को करवाचौथवाली बात पता चलता है। तब रितिक घर आकर पूछता है कि तुम्हें बताया नहीं की करवाचौथवाली पूजन है कहकर। ऐसे ही भारतीय समाज में व्रत-उपासना पर अंधविश्वास रखने का चित्रण दिया है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखित ‘पंचकन्या’ उपन्यास में भी अंधविश्वास का चित्रण किया गया है। माया और अश्विन दोनों चित्र मंदिर जाते हैं। मंदिर में आरती शुरू थी। सारे भक्त वह आरती में शामिल थे। माया के सामने ही सौ बत्तिवाली आरती फिरता रहा। उस धुँए और ऊंची उड़ती लौ के कारण अचानक माया धरती पर गिर जाती है। उपन्यास में अंधविश्वास का वर्णन करते हुए कहा है कि “मैं कुछ समझता तब तक तुम लोगों के घरे में थी। वे सब दूँड पड़े तुम्हारे पैरों में। यहाँ अक्सर ऐसा हो जाता है, कोई न कोई औरत चक्कर खाकर गिर जाती है और लोग सोचते हैं की.... नाराज मत होओ यह रोज मार्ग की बात है।”<sup>4</sup> वह गिरने के बाद सभी लोग कहते लगते हैं कि देवी आ गयी लेकिन वह तो धुँए के कारण गिर गई थी। इस तरह यह लोगो कि अंधविश्वास का वर्णन देखने को मिलता है। भारत में धार्मिक-संस्थाओं में चक्कर खाकर गिर गये तो वह लोग कहने लगता है कि दैवीय शक्ति का प्रवेश हो जाता है। इस तरह से

लोग अंधविश्वास में बढ़ोतरी होती जा रही है वही इस उपन्यास के माध्यम से धर्म का वर्णन देखने को मिलता है।

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। सभी धर्मों समुदायों के लोग मिल जुलकर एक साथ रहते हैं। लेकिन हिंदू धर्म में विभिन्न धाराएं, लोक-विश्वास पद्धतियां हैं। वही मुस्लिमान-ईसाई, बौद्ध, जैन धर्मों में अलग पद्धतियां हैं। भारत देश धर्म, भाषा, क्षेत्र जाति और संस्कृतिक धाराओं का मिलाजुला रूप है। यह अनेकता में एकता का संदेश देता है। समाज में शान्ति स्वतंत्रता समता प्रगति एवं विकास की परिस्थितियों के निर्माण धर्म का उद्देश्य है। सदाचार सिखाता है धर्म। धर्म की प्रेरणा पाकर मानव सद्मार्ग पर चलता है। लेकिन वर्तमान समय में मनुष्य की मनुष्यता को छोड़कर मनुष्य द्वारा बनाए गए धर्मों के नाम पर बनाए गए भेदभाव को ही मनुष्य अपना रहा है। कुछ लोग अपने लाभ के लिए मनुष्य को मनुष्य ही शत्रु मान रहा है। इसी तरह गीतांजलि श्री कृत ‘रेत समाधी’ उपन्यास में लेखकीय दृष्टि से इस विषय पर कहते हैं कि “आदमी अपनी बनाई मूर्त की पूजा करता है। भगवान से जो मूर्तें बनाई हैं उसकी नहीं।”<sup>5</sup> आज मनुष्य भगवान की न बल्कि खुद बनाए गये नियमों पर चल रहा है। मनुष्य होकर मनुष्य से प्रेम करना ही मनुष्य है यही भावना हर व्यक्ति के अंदर होना चाहिए। इसके साथ ही इस उपन्यास में लेखिका ने हिन्दू-मुस्लिम अन्तर्धार्मिक विवाह का चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलता है। वर्तमान समाज में सह शिक्षा के कारण युवक युवतियों का संपर्क बढ़ने के कारण अन्तर्धार्मिक विवाह बढ़ता गया। परंतु घरवाले अन्तर्धार्मिक होने के कारण इसका विरोध कर रहे हैं। इसी समस्या का चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में रेखांकित किया है। प्राचीन समाज में अन्तर्धार्मिक विवाह की मान्यता नहीं थी लेकिन 1870 के स्पेशल मैरिज एक्ट के अंतर्गत घर वाले इसे मानें तो शादी के लिए मान्यता मिलती है। इस उपन्यास में दादी माँ की बेटी



अपनी माँ चंदा देवी और पाकिस्तान के अनवर के विवाह के संदर्भ में अन्तर्धार्मिक विवाह की घटना को देखने को मिलता है। अन्तर्धार्मिक विवाह की सोच होते हुवे वे भी समाज में हिंदू-मुसलमान के बीच में जो अंतर रहा है इसे समाप्त करने की भूमिका निभाने का प्रयास किया है। साम्प्रदायिकता की भावना मिटाने के लिए यह अन्तर्धार्मिक एक सकारात्मक पहल है। दूसरे धर्म के प्रति महत्व देकर रिश्ते को बचाने का प्रयास किया है। जिसमें सभी धर्मों में प्रेम तथा सौंदर्य की भावना बनकर रहेगी।

उषा यादव द्वारा लिखित 'दीप अकेला' उपन्यास में समाज के माध्यम वर्ग का चित्रण किया है। इसमें धार्मिक अनुष्ठान तथा हिंदू धर्म के प्रति चलनेवाले विवाह का वर्णन यह किया है। 'दीप अकेला' इस उपन्यास में दिव्या अपने माँ-पिता को भाइयों को होते हुए भी इन्हें वह खुद संभालती है। वह अविवाहित है। उनके घर की स्थिति बहुत कठिन थी। उसके भाई उनके पत्नियों के साथ शहर में रहते हैं। तब उसके भतीजे दिनेश के विवाह में जाती है वहाँ के महिलाएं अजीब तरह की बातें करती हैं। इसका कारण यह था कि वह अविवाहित थी। हिंदू धर्म में बेटा हुआ तो खुशी मनाते हैं। वही बेटे आगे जाकर अपने माता – पिता को देखते नहीं हैं। समाज में बेटे को पिता की जायदाद के कानूनी रूप से अधिकार रहता है। परंतु समाज, धर्म, परिवार, उस अधिकार को छीन लेता है। इस तरह इस उपन्यास में धार्मिक अनुष्ठान का वर्णन किया है।

#### निष्कर्ष:

अंत में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान से उच्चतम शिखरों पर अपनी विजयी

प्राप्त की है। लेकिन स्वार्थ, अंधविश्वास, धर्मान्धता, धार्मिक कर्मकाण्ड, समभाव, धार्मिक अनुष्ठान आदि का घना अंधेरा हर तरफ फैला है। धर्म मानव के जीवन का अनिवार्य अंग है। धर्म मानव को सत्य के मार्ग पर जाने के लिए बाध्य करता है। सत्य के अंतर्गत सभी का आदर सत्कार आता है। चारों तरफ धर्म के नाम पर अनाचार, असत्य, अनैति, अधर्म का बोलबाला चल रहा है। समाज में फैली इन विकृतियों का वर्णन मधु कांकरिया, शरद सिंह, मनीषा कुलश्रेष्ठ, गीतांजलि श्री, उषा यादव ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। धर्म का उद्देश्य समाज को जोड़ता है न बल्कि तोड़ना। इसलिए हमें धर्म के नाम पर होनेवाले शोषण को पहचानकर उसका विरोध करना चाहिए।

#### संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. ज्योति वत्स- हिन्दी उपन्यास सांस्कृतिक परिदृश्य-पृ. सं -58
2. मधु कांकरिया – सुखते चिनार -भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली -प्रथम संस्करण-2012-पृ. सं -87
3. शरद सिंह-कस्बाई सिमोन-सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम संस्करण-2012-पृ. सं-147
4. मनीषा कुलश्रेष्ठ- पंचकन्या -सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम संस्करण-2014-पृ. सं – 82
5. गीतांजलि श्री-रेत समाधि -राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-प्रथम संस्करण-2018-पृ. सं-68